फरवरी के दूसरे पखवाड़े में गेहूं की फ़सल के लिए सुझाव

भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल ने फरवरी के दूसरे पखवाड़े में गेहूं की फ़सल की देखरेख के लिए किसानों को कुछ सुझाव दिए हैं।।

संस्थान के कृषि वैज्ञानिकों के सलाह दी है कि गेहूं में आवश्यकता अनुसार हल्की सिंचाई करें। तेज़ हवा चल रही हो तो सिंचाई रोक दें वरना फ़सल गिर सकती है जिससे नुकसान होने की संभावना रहती है।

विशेषज्ञों ने कहा है कि पोटासियम क्लोराइड का 0.2 प्रतिशत छिड़काव करने से अचानक तापमान में वृद्धि होने कि स्थिति में गेहूं की फ़सल में होने वाले नुकसान को बचाया जा सकता है।

जिन किसानों के पास स्प्रिंकलर (फव्वारा) सिंचाई कि सुविधा है, तापमान बढ़ने के स्थिति में दोपहर के समय 30 मिनट तक स्प्रिंकलर से सिंचाई कर सकते हैं। ड्रिप (तुपका) सिंचाई कि सुविधा हो तो किसान गेहूं की फ़सल में उचित नमी बनाए रखें।

फ़सल में पीला रतुआ रोग का निरीक्षण नियमित रुप से करते रहें। रोग लगने पर निकटतम कृषि विज्ञान केंद्र, अनुसंधान संस्थान या कृषि विभाग के विशेषज्ञों से सलाह लें। पीला रतुआ निश्चित होने पर प्रोपीकोनेज़ोल 25 ई.सी. का 0.1 प्रतिशत घोल बनाकर फ़सल पर छिड़काव करें। एक एकड़ के लिए 200 मिलीलीटर दवा 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

गेहूं में पत्ती माहूँ (चेपा) के लिए भी निरंतर निगरानी रखें। अगर चेपा की संख्या आर्थिक क्षति स्तर या ई.टी.एल (10-15 चेपा प्रति पौधा) को पार करती है तो क्यूनालफोस 25 प्रतिशत ई.सी. दवा की 400 मिलीलीटर मात्रा 200-250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।